**असाइनमेंट - टीईई जून 2026 तथा टीईई दिसंबर 2026**

**कार्यक्रम: बी.ए.जी. (दर्शनशास्त्र)**

**पाठ्यक्रम: सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन: भारतीय एवं पाश्चात्य**

**पाठ्यक्रम कोड: BPYE-142**

**निर्देश:**

1. **सभी पाँच प्रश्नों के उत्तर दें।**
2. **सभी पाँच प्रश्न समान अंकों के हैं।**
3. **प्रश्न संख्या 1 और 2 के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दें।**

1. राष्ट्रवाद की अवधारणा पर चर्चा कीजिए। राष्ट्रवाद के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कीजिए। 20

या

धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा पर निबंध लिखिए। भारतीय धर्मनिरपेक्षता किस प्रकार भिन्न है? चर्चा कीजिए। 20

2. न्याय क्या है? न्याय के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा कीजिए। 20

या

लोकतंत्र की अवधारणा पर चर्चा कीजिए। लोकतंत्र के मूल सिद्धांत क्या हैं? 20

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग **250** शब्दों में दीजिए। 10×2=20

a) स्वतंत्रता क्या है? नकारात्मक और सकारात्मक स्वतंत्रता में अंतर स्पष्ट कीजिए। 10

b) सकारात्मक कार्रवाई नीतिपर टिप्पणी लिखिए। 10

c) गांधीजी के स्वराज की अवधारणा पर टिप्पणी लिखिए। 10

d) अधिकारों की अवधारणा का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 10

e) लोकतंत्र को एक तंत्र (mechanism) के रूप में और एक मूल्य (value) के रूप में अलग-अलग स्पष्ट कीजिए। 10

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लगभग **150** शब्दों में दीजिए। 5×4=20

a) सहभागी लोकतंत्र की अवधारणा पर चर्चा कीजिए। 5

b) व्यक्तिवाद से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए। 5

c) अमर्त्य सेन के समानता संबंधी विचार पर टिप्पणी लिखिए। 5

d) रॉल्स के अंतर सिद्धांत (Difference Principle) पर चर्चा कीजिए। 5

e) मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद की अवधारणा पर टिप्पणी लिखिए। 5

f) नागरिक स्वतंत्रता (Civil Liberty) से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए। 5

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर लगभग **100** शब्दों में लघु टिप्पणी लिखिए। 4×5=20

a) मार्क्स के दर्शन में अलगाव (Alienation) 4

b) मानवाधिकार 4

c) लोकतंत्र एक मूल्य के रूप में 4

d) निजता का अधिकार 4

e) सुलहात्मक यातना 4

f) सामाजिक भेदभाव 4

g) वितरणात्मक न्याय 4

h) प्रवासी 4

## 1. राष्ट्रवाद की अवधारणा पर चर्चा कीजिए। राष्ट्रवाद के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कीजिए। 20

**उत्तर:**

### राष्ट्रवाद की अवधारणा

राष्ट्रवाद एक ऐसी सामाजिक-राजनीतिक भावना और विचारधारा है जिसमें लोग स्वयं को एक राष्ट्र के सदस्य के रूप में देखते हैं और उस राष्ट्र के प्रति साझा पहचान, निष्ठा तथा उत्तरदायित्व अनुभव करते हैं। राष्ट्र केवल लोगों की भीड़ नहीं होता। उसके निर्माण में सामान्य इतिहास, स्मृतियाँ, संस्कृति, भाषा, भू-क्षेत्र, राजनीतिक अनुभव और साथ रहने की इच्छा जैसे अनेक तत्व योगदान कर सकते हैं। इन सभी तत्वों का हर राष्ट्र में एक साथ होना आवश्यक नहीं है। कई बार अलग भाषाओं, धर्मों और परंपराओं वाले लोग भी समान नागरिक मूल्यों और साझा राजनीतिक भविष्य के आधार पर एक राष्ट्र बनाते हैं। इस प्रकार राष्ट्रवाद का मूल भाव सामूहिक पहचान को राजनीतिक और नैतिक महत्व देना है।

### राष्ट्र, राज्य और राष्ट्रीयता

राष्ट्रवाद को समझने के लिए राष्ट्र और राज्य में अंतर उपयोगी है। राज्य एक राजनीतिक संस्था है, जिसके पास निश्चित भू-क्षेत्र, शासन, कानून और संप्रभु सत्ता होती है। राष्ट्र मुख्यतः लोगों की सामूहिक पहचान और अपनापन व्यक्त करता है। राष्ट्रीयता उस संबंध की चेतना है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं को किसी राष्ट्र से जुड़ा मानता है। इसलिए राष्ट्र और राज्य हमेशा एक ही नहीं होते। कुछ राष्ट्र एक राज्य के भीतर रहते हैं, जबकि कुछ राज्यों में अनेक सांस्कृतिक और भाषायी समुदाय रहते हैं। राष्ट्रवाद अक्सर यह मांग करता है कि लोगों की सामूहिक पहचान को सम्मान मिले और वे अपने सार्वजनिक जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णयों में भाग ले सकें।

### राष्ट्रवाद के प्रमुख आधार

राष्ट्रवाद की शक्ति केवल भावनात्मक लगाव से नहीं आती। सामान्य ऐतिहासिक स्मृति लोगों को यह अनुभव कराती है कि उनका अतीत किसी हद तक जुड़ा हुआ है। भाषा और संस्कृति संचार तथा सांस्कृतिक निरंतरता का आधार बन सकती हैं। साझा भू-क्षेत्र लोगों को राजनीतिक समुदाय के